Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

फाँस : किसान जीवन की संघर्ष गाथा

संजय अ. गायकवाड
शोध छात्र,
डा. बा. आ. म. विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद

किसान जीवन का चित्रण मुख्य रूप से गोदान से आरंभ होता है। मुन्सी प्रेंमचंद ने जो शुरूवात कि थी उसी श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कडी संजीव कृत उपन्यास फॉस है।

संजीव कृषी जीवन से जुडे हुए उपन्यासकार है।उन्होंने किसान जीवन की जो अभिव्यक्ति कि है,वह स्वंय कि अनुभूति है। किसान के संघर्ष `उनकी समस्याओं को और हालात को उन्होंने फॉस के जरिए बडे सटीक ढंग से उजागर किया है। 21वीं सदीं में किसान का जीवन किस तरह संघर्ष से भरा हुआ है उसका लेखजोखा संजीव कृत फॉस उपन्यास है।

प्रेंमचंद ने गोदान में होरी के द्वारा किसान की संघर्ष गाथा को अभिव्यक्त किया है। प्रेंमचंद का होरी जीवन की अंतीम घडी तक अभिलाषाओं के बोझ तले घूटघूट कर अंतीम सांस लेता है। वह जिन्दगी से लढता है। संजीव कृत फॉस का शिवराज आधुनिक युग का किसान है। वह आधुनिक बीज,खाद और यंन्त्रो का उपयोग करनेवाला किसान है। फिर भी वह परिस्थितीयों से और जिंदगी से लढने के बदले आत्महत्या करता है– "आदमी आत्महत्या तभी करता हैं जब उसे मौत अच्छी लगती है या जीने के सभी रास्ते बंद हो जाते है।"(1)

21वीं सदीं के नाम पर आज हम भले ही अपने आपको विज्ञानवादी और आधुनिक मानते है पर किसानों के प्रति देखने का नजरीयॉ आज भी नहीं बदला। एक ओर किसान को अन्नदाता कहा जाता है,पर दुसरी ओर उसी किसान के उत्पाद कि किमत वे स्वंय नही तय करते। उसकी किमत बिचौली ठहराते है। उस किमत से उसका खर्च तक वसुल नहीं हो पाता। किसान जब उत्पाद को बिक्री केंद्र पर ले जाता है तो वहॉ पर भी बेईमानी और तौल में गडबडी देखने को मिलती है –"काटा कुछ ज्यादा झूका है,शेतकरी कुरमूराता है। अरे उतने से कुछ नहीं होता। थोडासा नोच लिया, अब ठीक है? वह क्या बोले, झूका तो अभी भी है। आरे मुँह में जबान नहीं हैं ? बेचना है तो बेचों नहीं तो रास्ता खाली करों।" (2) इस तरह किसान को खुद के उत्पाद को बेचने के लिए भी अपमानित होना पडता है। आधुनिक युग में भी किसान के सामने बेटी के विवाह में दहेज की समस्या देखने को मिलती है। बिना दहेज के शादी नही `कर पाता। एक ओर आर्थिक विपन्नता है तो दूसरी ओर जवान होती लडकीयॉ उसकी चिंता का विषय बनती है। शिबू तुकाराम को लेकर आपनी लडकी के लिए लडका देखने जाता है तो तुकाराम लडके के पिता को पुछता है–

तुकाराम –डिमाण्ड।

मुलगे के पिता – अपनी कोई डिमाण्ड नहीं लेकिन आपका इतना फर्ज बनता हैं कि आपकी मुलगी जहां जाए सुखी रहे। रेट तो सबको मालूम हैं, एक हिरों होंण्डा, एक लाख नगद। (3)

इस तरह लडका लडकी को देखता तक नहीं पर दहेज की बात सबसे पहले कि जाती हैं। किसान जीवन भर जी–जान लगाकर मेहनत करके अपने बच्चों को शिक्षा दिलाता हैं। पढाई पूरी होने के बाद माता–पिता को लगता है कि,हमारा बुरा वक्त टल गया हैं अब 'अच्छे दिन' आयेगें। बेटा भी नौकरी ढूढंने लगता हैं, पर वहॉ भी बिना घूस दिए नौकरी नही मिलती। घूस के लिए रुपये इक्कठा करने के लिए किसान खेत बेच देता है। वहॉ पर भी धांधली होती है। और नौकरी किसी और को मिलती है। एक और खेत भी हाथ से जाता है तो दूसरी और नौकरी भी। अपने पढे–लिखे बेटे के प्रति द्वेष अभिव्यक्त करती हुई मोहनदास की पत्नी कहती हैं–"बेटों को इतनी फिक होती तो कोई खोज खबर भी नहीं लेते कि हम जिन्दा है भी तो किस हाल में ? आखिर कौनसा गुनाह हो गया हमसे ? नौ महीने मर–जर कर जन्म दिया। गू–मूत उठाया। शेत बेच–बेचकर पढा दिया। पढाई के लिये ही नहीं नौकरी दिलाने के लिए भी घूस देने के लिए शेत बेचा। अब नौकरी दिलाना अपने बस की बात न थी तो क्या करतें ? "(4)

इस तरह पढे–लिखे बच्चो द्वारा माता–पिता का द्वेष करना, उनसे दूर रहना और उनकी तरफ ध्यान न देना आज की एक समस्या बन गई है, जो दिन–ब–दिन बढती जा रही है। वैश्विकरण के दौर में विज्ञानवादी लोंग मंगल गृह पर पानी खोज रहे है। ऐसे में किसान एक ओर आधुनिकता की ओर बढना चाहता है,तो दूसरी ओर अपने कल्याण के लिए अंन्धविश्वास के जाल मे फॅस रहा हैं। स्वॉग रचनेवाले बाबा,बुआ और सन्यासीओ के बहकावे मे आकर अपने और परिवार की खुशियों की बलि चढा रहे है। किसान के इस अन्धविश्वासको देख बाबा,बुआ और संन्यासी अपना स्वार्थ साध लेते है। फॉस उपन्यास के सिंधुताई और मोहनदादा जो गो वध के पाप से मुक्त होने के लिए स्वामी निरंजन देव गिरी के पास गये थे, तो पहले उनसे 100 रूपये लिये और फिर उपाय सुझाया। सिंधुताई कहने लगी–" हमें उबार लो स्वामीजी ! भहरा पडी है सिंधुताई उनके कदमों पर। बैल के गले का फंदा गले मे डालकर एक भिक्षा पात्र लेकर भीख मॉगनी पडेगी। शुद्वि तक न घर मे घूस सकते है न मनुष्य की बोली बोल सकते है। बैल की बोली बॉ–बॉ या फिर संकेत! क्या समझे ?"(5) बाबा का यह उपाय मानकर मोहन दादा पूरे गॉव मे बैल की तरह घूमने लगा। अब मोहनदादा न घर का रहा न गॉव का वह अंधविश्वास के कारण दर–ब–दर की ठोकरे खाता हुआ गॉव–गॉव घूमने लगा था। आज भी समाज में ऐसे कई मोहनदादा है जो बाबाओं के कारण या तो अपने परिवार से कट गए है या जेल की हवा खा रहें है।

प्रेंमचन्द द्वारा लिखित गोदान का होरी और धनियॉ पति–पत्नि अपने खेत को जोतने के लिए एक बाजू मे बैल और दूसरी बाजू मे होरी हल को ढोता है और धनिया हल सभांलती है। प्रेंमचन्द ने 1936 मे इस उपन्यास की रचना कि थी। उसके बाद लगभग 80 साल के बाद आज आधुनिक युग का दौर है और इस दौर में संजीव ने फॉस उपन्यास के जरिये किसानों के संघर्ष का चित्रण किया है। गोदान का वह दृश्य आज भी 80सालों के बाद फॉस मे देखने को मिलता है। फर्क इतना है कि यहॉ पर आदमी बदले हुए है–" दूर दिखाई दे रहा है मोहनदादा। बैल बने खिच रहा है अपने बचे हुए खेतो में अकेला बैल! हल की मूठ थाम रखी है सिंधुताईने। वहॉ कोई टिटकारी नहीं। कोई फटकार का निर्देश नहीं। सिर्फ एक मौन समझौता है.....। "(6) इस तरह युग का नाम बदला है, किसान की परिस्थितियॉ वही है। आधुनिकता के नाम पर ढिंढोरा पिटनेवाले समाज में आज भी किसान को बैल बनकर अपना खेत जोतना पडता है और जीवन से संघर्ष करना पड रहा है।

सडक के किनारे की खेती को अधिक महत्व था। क्योंकि वहॉ आना–जाना किसान के लिए सहेज था। नागरिकरण के कारण वह खेती भी अब नष्ट हो रही है। व्यापारी अधिक रुपयों का लालच देकर किसानों से खरीद रहे है। फॉस उपन्यास का मोहनदादा कहता है– "सडकों के किनारे सारी खेतीवाली जमीने बिक चूकी है। मकान बन रहे है। आनेवाले दिनों मे सिर्फ बिल्डींगे होगी, चमचमाती सडके होगी और चमचमाती गाडियॉ। न हमारे तम्हारे जैसे लोंग होगे,न शेती,न हमारी तुम्हारी बैल गाडियॉ।"(7)

सरकारी योजनाएँ भी किसान को संघर्ष मे ढकेलनेवाली होती है। सरकार किसानों को विभिन्न योजनाओ के द्वारा मदद तो करती है,पर वह किस रुप मे होनी चाहिए? किस प्रदेश के लिए कौन–सी मदद आवश्यक है यह नहीं देखा जाता। केवल एसी कमरों मे बैठकर पॅकेज दिया जाता है। पॅकेज की उपयोगिता देखी नहीं जाती। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंग की सरकारने विदर्भ में दूधारु गाय (हायब्रीड) देने का पॅकेज दिया था। जिसके कारण सभी किसानों के पास अब दूधारु गाय थी। जो अधिक मात्रा में दूध देती थी पर अधिक खाती भी थी। अब ज्यादा दूध होने के कारण उसे उचित भाव नही मील पा रहा था। दूसरी तरफ विदर्भ मे पानी की कमी होने के कारण उन्हे अधिक घास खिलाना भी मुश्किल हो गया था । वहॉ का किसान कहता है – "गाय न हुई जी का जंजाल हो गयी। इतने दूध का क्या करें ? कोई लेता वेता तो नहीं है,खपाये कहॉ। फिर खिलाएँ कैसे। पैसा तो निकलता नहीं।"(8) इस तरह गोदान के होरी कि इच्छा थी की उसके घर के सामने एक गाय बंधी हो लेकिन आज संजीवकृत फॉस तक आते–आते वही गाय किसानों की समस्या बन गयी है।

दहेज बच्चों का विवाह, नौकरी, अकाल, बाढ, रिश्वतखोरी, घूस, राजनेता की धोखेबाजी, राजनीतिक उदासिनता आदि समस्याओ से संघर्ष कर किसान हारकर आत्महत्या

कर रहा है। केवल महाराष्ट्र राज्य की संख्या देखी जाए तो"महाराष्ट्र राज्य में आठ घण्टो में एक किसान आत्महत्या कर रहा हैं।" (9) किसानों की आत्महत्याओं को पात्र–अपात्र बनाने की एक नयी समस्या से किसानों को झुझना पड रहा है। सरकारी मदद मिलने के लिए किसानों की आत्महत्या को पात्र–अपात्र करने के लिये 'बाबू वर्ग 'कई तरह के नियम बनाते है। एक ओर इनके कडे नियमों के कारण पिडीत परिवार को सहायता नहीं मिल पाती – "उनकी मौत आत्महत्या नही मानी गयी। वह क्या है? बाप के नाम जमींन मरा बेटा! आत्महत्या अपात्र ! कारण जमीन तो उसके नाम थी ही नही। यहॉ शिबू काका की आत्महत्या को पात्र नहीं माना गया। कारण जमीन पर कर्ज तो था ही नही? "(10) इन नियमों के कारण किसानों का सरकारी सहायता से भरोसा उठने लगा है।

गोदान का होरी हो या फॉस का शिबू हो दोनों को अपनी अंतीम सांस तक संघर्ष करना पडा है। दोनो परिवार भारत के किसान परिवारों का प्रतिनिधित्व करते है। किसानों की विडम्बना यह है कि, एकबार वह कर्जदार बन गया तो मरने बाद भी वह कर्ज मुक्त नहीं हो पाता। शकुन इसी यथार्थ को अभिव्यक्त करती हुए कहती है – इस देश का किसान कर्ज मे ही जन्म लेता है, कर्ज मे ही जीता है, कर्ज मे ही मर जाता है।

संजीवने फाँस उपन्यास के माध्यम से 21 वीं सदी के किसानों की संघर्ष गाथा को बडी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया हैं। सबका पेट भरनेवाला किसान लाखो की संख्या में आत्महत्या कर रहा हैं लेकीन व्यवस्था उसे रोक नहीं पा रहीं हैं।फाँस के द्वारा संजीवने व्यवस्था को चेतावनी दी है।

संदर्भ ग्रंथ

1) संपादक,डा एस वाय होनगेकर, डा आरिफ महात, 21वीं शती का हिंदी साहित्य नव विमर्श, पृ क्र 85
2) संजीव,फाँस,पृ क्र 38
3) वही,पृ क्र 94
4) वही,पृ क्र 49
5) वही,पृ क्र 56
6) वही,पृ क्र 53
7) वही,पृ क्र 36
8) वही,पृ क्र 68
9) लोकमत,13 अक्टूबर 2022 पृ क्र 6
10) संजीव,फाँस,पृ क्र 118